International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

डॉ. संतोष गायकवाड़

सहयोगी प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, सोनुभाऊ बसवंत महाविद्यालय, शहापुर, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई.

शोध सारांश:

दिनकर की कविताओं में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की महत्ता और उसमें शामिल संघर्षों की वीरता का उल्लेख मिलता है। उनके काव्य में स्वतंत्रता संग्रामियों, विशेष रूप से महात्मा गांधी, भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद और अन्य क्रांतिकारियों की वीरता और बलिदान को सराहा गया है। उनका प्रसिद्ध काव्य 'कुरुक्षेत्र' भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और उसमें संलग्न संघर्ष की गाथा है। यहाँ वे एक ओर महाभारत के युद्ध को और दूसरी ओर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को जोड़ते हैं, जहाँ संघर्ष और बलिदान का महत्व है। दिनकर का अधिकांश साहित्य राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत है। चीन के साथ युद्ध के दौरान, दिनकर की कविता 'परशुराम की प्रतीक्षा' अत्यंत लोकप्रिय हुई। यह कविता देश के सैनिकों से अहिंसा का त्याग कर वीरता अपनाने का आह्वान करती है। दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय जागरण की एक गहरी भावना दिखाई देती है। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से भारतीयों में देशभक्ति,आत्मविश्वास और राष्ट्रीय गौरव की भावना का संचार किया। दिनकर की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना पूरी तरह से झलकती है। उन्होंने न केवल साम्राज्यवाद का, बल्कि सामन्तवाद का भी विरोध किया। उन्होंने उन लोगों के विरुद्ध साहसपूर्वक लिखा जो राष्ट्रवाद के नाम पर अपने ढोंग करते थे, जिनके लिए लोकतंत्र केवल एक भ्रम है और जो सत्ता पाने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं।

कुंजी शब्द: भारतीयता, स्वतन्त्रता, राष्ट्रियता, वीरता, चेतना, सामाजिक चेतना, राष्ट्र, राष्ट्रवाद, आदि।

प्रस्तावना:

चेतना एक गहन मानसिक अवस्था है जो हमारे विचारों, भावनाओं और संवेगों को प्रभावित करती है। यह शब्द विशेष रूप से किसी व्यक्ति या समाज में जागरूकता, समझ या बोध की अवस्था को संदर्भित करता है। चेतना किसी व्यक्ति या समाज की वर्तमान स्थिति, घटना या दृष्टिकोण के प्रति जागरूकता है। यह न केवल व्यक्तिगत स्तर पर, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय स्तर पर भी लागू होती है। चेतना व्यक्तियों को स्वयं के बारे में अधिक जानने और समझने में मदद करती है। यह आत्मनिर्भरता, आत्मनिर्णय और मानसिक स्पष्टता को बढ़ाती है। सामाजिक चेतना सामाजिक सुधार लाती है। यह समाज के सदस्यों को उनकी ज़िम्मेदारियों के प्रति जागरूक बनाती है। राष्ट्रीय चेतना राष्ट्र के नागरिकों को एकजुट करती है और राष्ट्र की एकता, अखंडता और प्रगति के लिए कार्य करती है। चेतना केवल एक मानसिक अवस्था नहीं, बल्कि एक गहन प्रक्रिया है जो व्यक्तियों और समाजों की सोच, कार्यों और दृष्टिकोण को प्रभावित करती है। चाहे वह व्यक्तिगत चेतना हो, सामाजिक चेतना हो, या राष्ट्रीय चेतना हो, प्रत्येक स्तर पर यह हमारे दृष्टिकोण को व्यापक बनाती है और हमें हमारे कर्तव्यों, अधिकारों और दायित्वों के प्रति जागरूक बनाती है।

राष्ट्रीय चेतना वह मानसिक और भावनात्मक जागरूकता है जो किसी समाज या राष्ट्र के नागरिकों में अपने देश के प्रति उत्पन्न होती है। यह भावना भूगोल या सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि एक साझा संस्कृति, इतिहास, मूल्यों, संघर्षों और पहचान का प्रतीक है। जब लोग अपनी साझा पहचान और उद्देश्य को समझते हैं, तो उनमें राष्ट्रीय चेतना विकसित होती है। यह आमतौर पर राष्ट्र की संस्कृति, स्वतंत्रता संग्राम, सामाजिक और सांस्कृतिक आंदोलनों और ऐतिहासिक संघर्षों से उत्पन्न होती है। राष्ट्रीय चेतना का सबसे महत्वपूर्ण घटक देश के प्रति प्रेम, सम्मान और गौरव की भावना है। यह भावना राष्ट्र की संस्कृति, इतिहास और पहचान के प्रति गहरी समझ और सम्मान से उत्पन्न होती है। जब लोग अपने देश को सम्मान और गर्व से देखते हैं, तो उनकी राष्ट्रीय चेतना जागृत होती है। यह नागरिकों को एकता और अखंडता की भावना

प्रदान करती है। विभिन्न जातियों, धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों के बावजूद, यह समाज को एक समान पहचान और उद्देश्य के इर्द-गिर्द एकजुट करती है। राष्ट्रीय चेतना का एक उद्देश्य नागरिकों को एकजुट करना, अपने मतभेदों को भुलाना और राष्ट्र की प्रगति में योगदान देना है।

राष्ट्रीय चेतना समाज में बदलाव और सुधार की दिशा में एक प्रेरक शक्ति बनती है। "राष्ट्रीय चेतना में सामाजिक उन्नति की अनुकरणीय प्रेरणा होती है। राष्ट्रीय चेतना में देश-प्रेम की पावन-धारा, प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति आकर्षक अनुराग, धर्म और संस्कृति के प्रति अनुप्रेरक निष्ठा, परम्पराओं के प्रति आस्था, स्वाभिमान के मनमोहक रंग होने के साथ सर्वजन हिताय का अनुपमेय स्वरूप होता है।"[१] यह लोगों को अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों का एहसास कराती है और उन्हें उन मुद्दों पर जागरूक करती है जो राष्ट्र की प्रगति में रुकावट डालते हैं। जैसे भ्रष्टाचार, सामाजिक असमानता, जातिवाद, और गरीबी के खिलाफ जागरूकता उत्पन्न करना। इससे व्यक्ति को अपनी संस्कृति, परंपराओं, और ऐतिहासिक धरोहर के महत्व का एहसास होता है। यह उन्हें अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने और आने वाली पीढ़ियों को इसे संरक्षित करने के लिए प्रेरित करती है।

राष्ट्रीय चेतना का एक महत्वपूर्ण आयाम है स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की भावना। यह विशेष रूप से स्वतंत्रता संग्रामों के दौरान विकसित होती है, जब लोग अपनी स्वतंत्रता, सम्मान और अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष करते हैं। स्वतंत्रता संग्रामों की जागरूकता ने कई देशों में राष्ट्रीय चेतना को प्रेरित किया और उसे एकजुट किया। भारतीय राष्ट्रीय चेतना की सबसे बड़ी और सबसे प्रसिद्ध घटना स्वतंत्रता संग्राम थी। जब ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ भारतीय नागरिकों में एकजुट होने की भावना विकसित हुई, तो यह राष्ट्रीय चेतना का एक सशक्त रूप था। महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहमति, विरोध और संघर्ष की भावना ने भारतीयों को एकजुट किया और उन्हें यह समझने में मदद की कि वे केवल भारतीय ही नहीं, बल्कि एक साझा संस्कृति और पहचान वाले राष्ट्र के नागरिक भी हैं।

राष्ट्रीय चेतना से राष्ट्र की एकता और अखंडता मजबूत होती है। यह विभिन्न सांस्कृतिक, भाषाई और धार्मिक विविधताओं के बावजूद राष्ट्र को एकजुट रखती है। "देश में सामाजिक वैविध्य होना स्वाभाविक है, किन्तु उनमें गतिशील रहने वाला समष्टिगत भाव और अनेकता में एकता की अंतश्चेतना राष्ट्रीय चेतना का भाव विकसित करती है। राष्ट्रीय चेतना समष्टि के हिताय प्रभावी रूप में सामने आती है।"[२] राष्ट्रीय चेतना समाज के नागरिकों को उनके अधिकारों, कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक बनाती है। यह उन्हें अच्छे नागरिक बनने के लिए प्रेरित करती है और राष्ट्र के विकास में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करती है। जब नागरिकों में राष्ट्रीय चेतना जागृत होती है, तो वे अपने अधिकारों और राष्ट्र के गौरव के लिए लड़ने के लिए तैयार होते हैं। यह किसी भी राष्ट्र की प्रगति और समृद्धि के लिए आवश्यक है। राष्ट्रीय चेतना युवा पीढ़ी को राष्ट्र के भविष्य के निर्माण में भाग लेने के लिए प्रेरित करती है। यह उन्हें अपने कर्तव्यों को समझने और राष्ट्र की दिशा को सकारात्मक रूप से आकार देने में मदद करती है।

अत: कह सकते है कि, राष्ट्रीय चेतना केवल एक भावना नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी मानसिक और भावनात्मक स्थिति है, जो राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक के दिल और मस्तिष्क में अपने देश के प्रति सच्चे प्यार और जिम्मेदारी का अहसास कराती है। यह एकता, गौरव, और सामूहिक संघर्ष की भावना पैदा करती है, जो राष्ट्र की शक्ति और उसकी प्रगति का आधार बनती है।

रामधारी सिंह 'दिनकर' का काव्य भारतीय राष्ट्रीय चेतना का सशक्त प्रकटक है। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से भारतीय समाज, संस्कृति और राजनीति में जागरूकता और राष्ट्रीयता को जागृत किया। दिनकर के काव्य में भारत की एकता और अखंडता को अत्यधिक महत्व दिया गया है। उनका मानना था कि राष्ट्र की ताकत उसकी एकता में है। वे भारत को एक संप्रभु और स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में देखने के पक्षधर थे और उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से भारतीयों को एकजुट होने का आह्वान किया। उनकी कविताओं में भारत माता की महिमा और उसकी गरिमा को बार-बार रेखांकित किया गया है। डॉ. मुकेश कुमार लिखते हैं- "दिनकर जी राष्ट्रीय चेतना के प्रतिनिधि कवि हैं। देश को आजाद कराने की छटपटाहट उनके काव्यों में देखी जा सकती है। उन्होंने देशवासियों के अंदर राष्ट्रीय भावना का भरपूर संचार किया। साथ ही उन्होंने ने यह माना कि देश में व्याप्त असमानता, साम्प्रदायिकता और ब्रह्मणवाद की वजह से देश की एकता कमजोर होती है। न्याय और समता पर आधारित लोकतांत्रिक व्यवस्था में ही देशवासियों के अंदर बंधुता और राष्ट्रीय भावना का संचार संभव है। राष्ट्र कवि दिनकर ने अद्भुत रचना कौशल पर जहाँ एक ओर ब्रिटिश साम्राज्यवाद से लोहा लिया वहीं दूसरी ओर जन-जागृति के बल पर भारतीय समाज के लोगों के अंदर उत्साह,ओज प्रेम और आत्मबल भरने का महत्वपूर्ण कार्य किया ।"[३]

दिनकर की कविताओं में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की महत्ता और उसमें शामिल संघर्षों की वीरता का उल्लेख मिलता है। उनके काव्य में स्वतंत्रता संग्रामियों, विशेष रूप से महात्मा गांधी, भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद और अन्य क्रांतिकारियों की वीरता और बलिदान को सराहा गया है। उनका प्रसिद्ध काव्य 'कुरुक्षेत्र' भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और उसमें संलग्न संघर्ष की गाथा है। यहाँ वे एक ओर महाभारत के युद्ध को और दूसरी ओर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को जोड़ते हैं, जहाँ संघर्ष और बलिदान का महत्व है। दिनकर का अधिकांश साहित्य राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत है। चीन के साथ युद्ध के दौरान, दिनकर की कविता 'परशुराम की प्रतीक्षा' अत्यंत लोकप्रिय हुई। यह कविता देश के सैनिकों से अहिंसा का त्याग कर वीरता अपनाने का आह्वान करती है। 1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान, महाकवि दिनकर ने अपनी कविता 'परशुराम की प्रतीक्षा' में सिंह की भांति गर्जना की और राष्ट्र के शौर्य का जागरण किया-

"है रुकी जहाँ भी धार, शिलाएँ तोड़ो,
पीयूष चन्द्रमाओं को पकड़ निचोड़ो।
चढ़ तुंग शैल शिखरों पर सोम पियो रे,
योगियों नहीं, विजयी के सदृश जियो रे।"[४]

दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय जागरण की एक गहरी भावना दिखाई देती है। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से भारतीयों में देशभक्ति,आत्मविश्वास और राष्ट्रीय गौरव की भावना का संचार किया। दिनकर की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना पूरी तरह से झलकती है। उन्होंने न केवल साम्राज्यवाद का, बल्कि सामन्तवाद का भी विरोध किया। उन्होंने उन लोगों के विरुद्ध साहसपूर्वक लिखा जो राष्ट्रवाद के नाम पर अपने ढोंग करते थे, जिनके लिए लोकतंत्र केवल एक भ्रम है और जो सत्ता पाने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। "दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना अपनी समग्रता में दिखाई देती है। वे साम्राज्यवाद ही नहीं अपितु सामन्तवाद के भी विरोधी थे। उन्होंने उन सत्ताधीशों के विरूद्ध बेबाक होकर लिखा जो राष्ट्रीयता के चोले में पाखण्ड को ढके रहते है तथा जिनके लिये लोकतन्त्र दिखावा मात्र है व जो सत्ता प्राप्ति हेतु किसी भी सीमा तक जा सकते हैं। ऐसे राष्ट्रीयता के शत्रुओं के लिए दिनकर की कविताएँ आज भी एक सांस्कृतिक तमाचा है जो बनावटी राष्ट्रवाद को ललकारता है।"[५] दिनकर की कविताएँ राष्ट्रवाद के मुँह पर एक सांस्कृतिक तमाचा और बनावटी राष्ट्रवाद का आह्वान हैं। उनका प्रसिद्ध काव्य 'रश्मिरथी' इस दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसमें वे महाभारत के पात्र अर्जुन और कर्ण के माध्यम से भारतीय समाज को जागरूक करते हैं कि जीवन में संघर्ष और विपरीत परिस्थितियों से घबराना नहीं चाहिए। उन्होंने भारतीयों को यह समझाया कि राष्ट्र की सेवा में संकल्पित रहना सबसे महत्वपूर्ण है। रामधारी सिंह 'दिनकर' का काव्य राष्ट्रीय चेतना से भरा हुआ है। उनकी कविता 'रश्मिरथी' में कर्ण के माध्यम से संघर्ष, नैतिकता और राष्ट्रीय गौरव की गहरी भावना व्यक्त की गई है। वे अपने काव्य में भारत की स्वतंत्रता, वीरता, और गौरव को जागरूक करते हैं-

"क्रांति -धात्रि कविते ! जग उठ,आडम्बर में आग लगा दे;
पतन, पाप,पाखंड जलें, जग में ऐसी ज्वाला सुलग दे।"[६]

दिनकर की कविताएँ स्वतंत्रता प्राप्ति और सामाजिक सुधार के लिए संघर्ष की आवश्यकता पर बल देती हैं। उनका मानना था कि यदि किसी समाज को आत्मनिर्भर और समृद्ध बनना है, तो उसे संघर्ष का मार्ग अपनाना होगा। उनकी कविताएँ क्रांति और सामाजिक परिवर्तन की भावना को प्रतिबिम्बित करती हैं, जो भारतीय समाज की जड़ता और उपेक्षा को चुनौती देती हैं। दिनकर की कविताएँ भारतीय नागरिकों को आदर्श नागरिक बनने की प्रेरणा देती हैं। उन्होंने सिखाया कि एक सशक्त राष्ट्र के निर्माण के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्तव्यों को समझना होगा और देश की सेवा करनी होगी। उनका मानना था कि जब तक भारतीय समाज अपने कर्तव्यों का पालन करता रहेगा और एकजुट रहेगा, तब तक कोई भी बाहरी शक्ति भारत को पराजित नहीं कर सकती। दिनकर का राष्ट्रवाद निष्क्रियता, उपभोक्तावाद, पूंजीवाद, सामाजिक-आर्थिक असमानता, सांप्रदायिकता और ब्राह्मणवाद का विरोध करता है। उनका राष्ट्रवाद कर्म के चिंतन पर जितना ज़ोर देता है, उतना ही व्यक्तिगत स्वाभिमान पर भी ज़ोर देता है। इसके अलावा, दिनकर उस असमानता-आधारित सामाजिक दुःख की भी आलोचना करते हैं जो कठोर प्रयासों के बावजूद भी बना रहता है। कवि अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि कितना अच्छा होता यदि सभी परिश्रमी होते और सभी का जीवन समृद्ध होता। महिलाओं, दलितों, गरीबों और किसानों के प्रति संवेदनशीलता उनकी राष्ट्रीय भावना की एक प्रमुख विशेषता है। उनकी कविता मानवता का प्रतीक है, सामाजिक कुरीतियों और धार्मिक कट्टरता का विरोध करती है। उनकी कविता सभी प्रकार की अनैतिकता, जड़ता, अमानवीयता और

अन्याय के विरुद्ध विद्रोह करती है। व्यक्ति-व्यक्ति के बीच के सभी भेदों और जाति, धर्म, लिंग, वर्ग, नस्ल और संप्रदाय की बाधाओं के प्रति उनकी अवमानना, दिनकर के भावनात्मक राष्ट्रवाद को स्थापित करती है।

दिनकर का काव्य अतीत के संघर्षों की गाथा ही नहीं, बल्कि भारतीय समाज और राष्ट्र की वर्तमान स्थिति के प्रति चेतना जागृत करने का माध्यम भी है। उनकी कविताएँ भारतीय राजनीति और समाज में राष्ट्रवाद, वीरता और राष्ट्रसेवा की प्रेरणा देती रहती हैं। उनकी कविताओं में स्वाधीनता की ललक झलकती है। उन्होंने देशवासियों में राष्ट्रीय भावना का गहन संचार किया। उन्होंने यह भी माना कि असमानता, सांप्रदायिकता और ब्राह्मणवाद देश की एकता को कमज़ोर करते हैं। न्याय और समानता पर आधारित लोकतांत्रिक व्यवस्था में ही देशवासियों में भाईचारा और राष्ट्रीय भावना का विकास हो सकता है। अपनी असाधारण रचनात्मक क्षमता से राष्ट्रकवि दिनकर ने न केवल ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष किया, बल्कि जनजागरण के माध्यम से भारतीय समाज में उत्साह, जोश, प्रेम और आत्मविश्वास जगाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने पराजित भारतीयों का मनोबल बढ़ाने के लिए भारत के स्वर्णिम अतीत का अन्वेषण किया।

निष्कर्ष:

रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविताएँ राष्ट्रीय चेतना को गहराई से अभिव्यक्त करती हैं। उनकी कविताएँ भारतीय समाज और संस्कृति को जागृत, पुनर्जीवित और एकता के सूत्र में पिरोने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अपनी रचनाओं के माध्यम से उन्होंने न केवल स्वतंत्रता संग्राम का गौरवगान किया, बल्कि भारतीय समाज को उसके कर्तव्य और संघर्ष का स्मरण भी कराया। उनकी कविताओं में एक ऐसी प्रेरणा है जो भारतीयों को राष्ट्र सेवा के लिए समर्पित होने के लिए निरंतर प्रेरित करती रहती है। अतीत के महत्वपूर्ण पौराणिक पात्रों का उपयोग करते हुए उन्होंने अपनी कहानियों और लघु कथाओं के माध्यम से देशभक्ति की भावना जागृत की। उन्होंने भारतीयों को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान प्राप्त एकता का स्मरण कराया और भविष्य में भी इसी एकता को बनाए रखने का आह्वान किया। उन्होंने भारतीय एकता और बंधुत्व को नष्ट करने वालों पर तीखा प्रहार किया। अपने विपुल साहित्यिक योगदान और कालजयी रचनाओं के माध्यम से, दिनकर साहित्य के क्षितिज पर सूर्य की तरह चमकते रहेंगे।

संदर्भ सूची:

१. प्रो. नरेश मिश्र, आधुनिक हिन्दी राष्ट्रीय काव्याधरा: राष्ट्रियता और मानवतावाद(२००४), संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ. १३
२. वही, पृ. १२
३. डॉ. मुकेश कुमार, दिनकर की रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना के स्वर, इंटरनेशनल जर्नल फॉर रिसर्च ट्रेंड्स अँड इनोवेशन्स, २०२२, पृ. ५९६
४. दिनकर, रामधारी सिंह, परशुराम की प्रतीक्षा
५. डॉ. सेमल्टी वंदना, दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना, शोध मंथन, जुलाई- सितंबर २०१९, पृ. ९३४
६. दिनकर, रामधारी सिंह, रेणुका, कविता ‘कस्मै देवाय’, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण २०१५, पृ. १३०